शिक्षा पर महान व्यक्तियों के विचार

SHRI

ISSN-2348-4861

Law and Society :

A New Challenge

International Journal of Law & Social Science

Vol .VI Year - 3 July-December 2016

Law and Society: A New challenge

(International Journal of Law & Social Science)

Vol .VI **Year - 3** **July-December 2016**

Co-editor
Dr. Manish Yadav
Assistant Professor
Maharashtra National Law University,
Nagpur (Maharashtra)

Editor
Dr. Vikash Agrawal
Assistant Professor
School of Law, Dr. Harisingh Gour University
(A Central University)
Sagar (M.P.)

Editor in Chief
Dr. Jeetendra Gupta
School of Law, Dr. Harisingh Gour University
(A Central University)
Sagar (M.P.)

Printed by
Bhopal Suvidha Agency, Bhopal (M.P.)

डॉ. हरीसिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय सागर में संग्रहीत शिव प्रतिमायें

डॉ. शिवकुमा...
पोस्ट डॉक्टोरल फेलो (यू.जी.सी. ...)
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व ...
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर

डॉ. हरीसिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय का उदय 1968 में हुआ था। यह संग्रहालय डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में स्थापित है। यह संग्रहालय केवल बुन्देलखण्ड बल्कि म0प्र0 के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। इस संग्रहालय में एरण (जिला-सागर), त्रिपुरी (जिला-जबलपुर), तुमैन (जिला-गुना), मल्हार (जिला-बिलासपुर), (जिला-रायसेन) तथा घोड़ामाड़ा (जिला-डिंडोरी) के पुरातत्वीय उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों का संग्रह है। इस संग्रहालय में प्रदर्शित कलाकृतियाँ शैव धर्म से भी संबंधित हैं। बुन्देलखण्ड का यह क्षेत्र शैव ... उद्भव एवं विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। इस क्षेत्र में गुप्तकाल से ही 'शैव मंदिर एवं प्रतिमा... निर्माण किया जाने लगा था। यहाँ से प्राप्त इन महत्वपूर्ण शिव प्रतिमाओं को इस संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय में प्रदर्शित इन शिव प्रतिमाओं का विवरण निम्नानुसार है:-

1. गजासुर वध प्रतिमायें :-

शिव के द्वारा गजासुर वध की कथा का वर्णन कूर्म पुराण, शिव महापुराण एवं वराह पुराण में किया ... अंधकासुर द्वारा पार्वती के अपहरण के प्रयास से क्रोधित शिव ने अंधकासुर का वध करने का निश्चय ... उसी समय में नील नामक असुर गज रूप में शिव का वध करने पहुंचा किंतु वीरभद्र ने उसका वध कर ... चर्म को शिव को प्रदान कर दिया।1 अशुमद्भेदागम, मत्स्यपुराण में गजासुरसंहार प्रतिमा निर्माण के निर्देश ... गये हैं।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय में गजासुर वध की दो कलात्मक प्रतिमायें प्रदर्शित ... प्रथम प्रतिमा में चतुर्भुजी देव का नाभि से नीचे का अंश तथा भुजायें खंडित हो चकी हैं। लाल बलुआ पाषाण ... निर्मित इस प्रतिमा का परिमाप 50x52 सेमी. है। प्रतिमा का पंजीयन क्र. 383 है। त्रिभंग मुद्रा में खड़े देवता ... बायी ऊपरी हाथ में धारण किया हुआ गजचर्म है। देवता की रौद्र मुखमुद्रा है। उनकी केशराशि रूद्राक्ष ... सुसज्जित, कर्ण आभूषण, कंधों पर बिखरी अलकावली, कंठाहार, नाग, भुजबंध, कंकण और रूद्राक्ष से सुसज्जित ... वनमाला दर्शनीय है। बायें पार्श्व में गज शुण्ड सहित प्रदर्शित है। यह प्रतिमा लगभग 9 वीं सदी ईसवी की है। इस संग्रहालय में प्रदर्शित शिव की गजासुर वध की द्वितीय प्रतिमा दसभुजी है। यह प्रतिमा तुमैन (अशोक नगर) से प्राप्त है और इसका परिमाप 64x57 सेमी. है। इस प्रतिमा का निर्माण लाल बलुआ पत्थर से किया गया ... और प्रतिमा की पंजीयन संख्या 402 है। इस प्रतिमा में आलोढ़ मुद्रा में प्रदर्शित देवता का बांया पैर अपस्मार पुरूष की पीठ पर स्थापित है। उनके दाहिने हाथों में क्रमशः त्रिशूल, खड्ग, अस्पष्ट आयुध व डमरू है। ... हाथ तथा सभी बांये हाथ खंडित हो चुके हैं। प्रतिमा के बांये पार्श्व में प्रदर्शित गजासुर खंडित है। ... कुण्डल, चपटा कण्ठाहार, वनमाला कटिमेखला, धोती और पाद्वलय से सुशोभित देवता के दाहिने पार्श्व ... वीरभद्र और बायें पार्श्व में दण्डधारी कार्तिकेय और एक उपासक प्रदर्शित है। देवता के बायें चरण के ... नदी की लघु आकृति है। कलचुरी काल में निर्मित यह प्रतिमा अत्यंत कलात्मक है और इसका निर्माण ... सदी ईसवी में हुआ है।

2. रावणानुग्रह प्रतिमायें :-

शिव की अनुग्रह प्रतिमाओं में रावणानुग्रह प्रतिमाओं का विशेष महत्व है। इस प्रकार की प्रतिमाओं में ... पास बैठी देवी उमा को प्रदर्शित किया जाता है। इस प्रतिमा से संबंधित कथा[2] के अनुसार कुबेर को ... जब रावण लंका लौट रहा था तो रास्ते में उसका विमान रूक गया। यहाँ पर रावण को मर्कटानन ... नन्दिकेश्वर मिले। विमान रूकने का कारण पूछने पर नन्दिकेश्वर ने उसे बताया कि इस समय महादेव और ... पर्वत पर विहार कर रहे हैं और किसी को भी यहाँ से निकलने की अनुमति नहीं है। यह सुनकर रावण ... हँसा और शिव की भी हँसी उड़ायी। इस पर नन्दिकेश्वर ने श्राप दिया कि उसकी आकृति वाले मर्कट ...

उसका नाश होगा । क्रोधित रावण ने अपनी दशों भुजायें फैलाकर समूचे पर्वत को उखाड़ने का प्रयास किया। जिसके परिणामस्वरूप कैशाल पर्वत डगमगाने लगा। उमा भय के कारण शिव से लिपट गई। शिव ने सब जानकार पैर के अंगूठे से दबाकर कैलाश पर्वत को स्थिर ही नहीं किया वरन रावण को भी दबा दिया। रावण ने रो कर शिवाराधना की अतएव उसका नाम रावण (रोने वाला) पड़ा। शिव ने अंत में रावण पर कृपा की और उसे लंका लौटने की अनुमति दी।

डॉ. हरीसिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय में रावाणानुग्रह प्रकार की एक कलात्मक प्रतिमा संग्रहीत है। कलचुरी काल की 11वीं सदी ईसवी की इस प्रतिमा में चौकी पर ललितासन मुद्रा में शिव व उमा आलिंगनबद्ध मुद्रा में बैठे प्रदर्शित हैं। चतुर्भुजी शिव के दांयी ओर की ऊपरी हाथ में त्रिशूल व निचला हाथ खंडित है। जबकि बांये ऊपरी हाथ में वे सर्प लिये हुए हैं और निचला हाथ देवी के उरोज पर स्थित है। द्विभुजी देवी का दांहिना हाथ शिव के स्कंध पर है और उनके बांये हाथ में कंघा है । प्रतिमा के निचले भाग में दांयी ओर गणपति व बांयी और कार्तिकेय और मध्य में भृंगी ऋषि नृत्य करते हुए दिखलाये गये हैं। सबसे नीचे अनुचरों सहित कैलाश पर्वत उठाये रावण प्रदर्शित है। प्रतिमा के शिरोभाग में गंधर्व युगल के नीचे बांयी ओर लम्बकूर्च सहित ब्रह्मा और बांयी ओर विष्णु ललितासन मुद्रा में बैठे हुए हैं। मध्य में नटराज भी प्रदर्शित है। 10वीं सदी ईसवी की लाल बलुआ पत्थर से निर्मित इस प्रतिमा का परिमाप 68x43 सेमी है। प्रतिमा की पंजीयन संख्या 429 है।

इस संग्रहालय में रावाणानुग्रह प्रकार की एक अन्य प्रतिमा भी प्रदर्शित है । इस प्रतिमा में उमा महेश्वर के कंधे के ऊपर का भाग खंडित हो गया है। संग्रहालय की ऊपर वर्णित प्रतिमा से समानता रखने वाली इस प्रतिमा में मुख्य अंतर यह है कि प्रतिमा में देवी के दायें हाथ में दर्पण है और शिव के दाहिने हाथ में बिजौरा नीबू दिखलाया गया है। प्रतिमा में चरण चौकी के नीचे सिंह, नंदी एवं नृत्य करते भृंगी ऋषि भी प्रद्धर्शित हैं। सबसे नीचे कैलाश पर्वत ऊपर उठाये रावण भी प्रदर्शित है। लाल बलुआ पत्थर से निर्मित यह प्रतिमा 12वीं सदी ईसवी की है। इसका परिमाप 54x40 सेमी है। प्रतिमा की पंजीयन संख्या 551 है।

3. उमा महेश्वर प्रतिमायें:–

उमा–महेश्वर प्रकार की प्रतिमाओं में शिव उमा के साथ प्रदर्शित किये जाते हैं। श्रीमद्‌भागवत[3] उमा–महेश्वर प्रतिमा में शिव को द्विभुजी बनाये जाने का निर्देश देता है । रूपमण्डन[4] में इस प्रकार की प्रतिमा में शिव को चतुर्भुजी बनाये जाने का निर्देश दिया गया है और बताया गया है कि उनके बॉयी ओर के एक हाथ में सर्प एवं दूसरा हाथ देवी के उमा के कंधे पर दिखाया जाना चाहिए । उनके दांयी ओर के एक हाथ में त्रिशूल व दूसरे हाथ में मातुलिंग फल दिखाया जाना चाहिए । रूपमण्डन में यह भी कहा गया है कि उमा–महेश्वर प्रतिमा के साथ वृषभ, स्कंध तथा नृत्य करते हुए भृंगी ऋषि को भी दिखाया जाना चाहिए । विष्णुधर्मोत्तरपुराण[5] के अनुसार इस प्रकार की प्रतिमा में उमा व शिव को एक ही पीठिका पर आलिंगन करते हुए प्रदर्शित किया जाना चाहिए। उमा का दाहिना हाथ शिव के कंधे पर और बॉये हाथ में कमल पुष्प दिखाया जाना चाहिए।

इस संग्रहालय में उमा–महेश्वर की तीन कलात्मक प्रतिमायें प्रदर्शित हैं । प्रथम प्रतिमा में ग्यारहवीं सदी ईसवी के कलचुरी कालीन एक शिलापट्ट की ऊपरी मेधा में उमा–महेश्वर को चौकी पर ललितासन मुद्रा में बैठे हुए प्रदर्शित किया गया हैं । जटाधारी शिव चक्र, कुण्डल, हार वनमाला, भुजबंध, कंकण, धोती धारण किये हुए हैं। उनकी दांयी भुजा में सर्प है जबकि बांयी भुजा वे देवी के उरोज पर रखे हुए हैं। देवी उमा के बांये हाथ में पदम हैं जबकि दायें हाथ से वे शिव का आलिंगन किये हुए हैं । प्रतिमा के पार्श्व में कार्तिकेय, गणेश, भैरव व उपासक प्रदर्शित हैं। नीचे सिंह व नंदी के मध्य नृत्यरत भृंगी ऋषी प्रदर्शित है। शिलापट्ट के मध्यवर्ती मेधा में ससैन्य प्रायाण भरता हुआ राज पुरूष प्रदर्शित है। नीचे के भाग में युद्ध का दृश्य अंकित है। यह प्रतिमा लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है और इसका परिमाप 152 x 54 सेमी. है। प्रतिमा की पंजीयन संख्या 430 है।

चित्र क्रमांक 1 : उमा–महेश्वर प्रतिमा, 11वीं शती ईसवी

इस संग्रहालय की द्वितीय उमा–महेश्वर प्रतिमा 11वीं सदी ईसवी की कलचुरी कालीन है। यह प्रतिमा बलुआ पत्थर से निर्मित है और इसका परिमाप 34x28 सेमी है । प्रतिमा की पंजीयन संख्या 385 है। प्रतिमा में चौकी पर ललितासन मुद्रा में चतुर्भजी शिव की बांयी जंघा पर द्विभुजी उमा ललितासन मुद्रा में हुई हैं । शिव के हाथों में क्रमशः त्रिशूल, बिजौरा नीबू, सर्प है व चौथे हाथ से वे देवी को आलिंगित किये हैं। देवी के बांये हाथ में सनाल कमल व दाहिना हाथ शिव के स्कंध पर रखा हुआ है। इस प्रतिमा की विशेषता यह है कि दोनों के पार्श्व में लंबी माला लिये हुए एक–एक गंधर्व दिखलाया गया है। शिरोभाग में गंधर्वों द्वारा देव दम्पत्ति के शीर्ष के ऊपर मालाओं द्वारा निर्मित छत्र है।

इस संग्रहालय में उमामहेश्वर की तृतीय प्रतिमा 9वीं सदी ईसवी की है । यह प्रतिमा भी लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। प्रतिमा का परिमाप 50 x 27 सेमी है । संग्रहालय में इसकी पंजीयन संख्या 377 है। प्रतिमा में चौकी पर ललितासन मुद्रा में आसीन शिव की बांयी जंघा पर दोनों पैर मोड़कर बैठी हुई उमा को प्रदर्शित किया गया है। शिव के दांहिने प्रथम हाथ में त्रिशूल एवं द्वितीय हाथ में बिजोरा नीबू है जबकि उनकी बांयी ओर के एक हाथ में पुष्प व दूसरे हाथ को वे उमा के उरोज पर रखे हुए हैं । देवी उमा अपना दांया हाथ शिव के स्कंध पर रखे हुए हैं एवं बायें हाथ में वे कमल लिये हुए हैं । चौकी के नीचे सिंह, नंदी के मध्य नृत्यरत भृंगी ऋषि प्रदर्शित किये गये हैं। प्रतिमा के 'शीर्ष भाग में मालाधारी गंधर्व और नीचे दांहिने पार्श्व में बैठे हुए गण प्रदर्शित हैं।

4. शिव की अर्द्धनारीश्वर प्रतिमा :–

शिव का यह रूप शैव एवं'शाक्त दोनों धर्मो में एकता का प्रतीक है। उनका यह रूप पुरूष एवं स्त्रीत्व दोनों के संयुक्त रूप को प्रकट करता है । अर्द्धनारीश्वर की कल्पना अत्यंत प्राचीन है । जिस अण्ड से सृष्टि उत्पन्न हुई उसका आधा भाग पुरूष एवं आधा भाग स्त्री का था6। ऋग्वेद में प्रत्येक पुरूष में अर्द्ध स्त्रीत्व और प्रत्येक स्त्री में पुरूष तत्व स्वीकार किया गया है[7]। श्रीमदभागवत[8] के अनुसार शिव ने प्रीतिवश अपना अर्द्धभाग पार्वती को समर्पित कर दिया था। विष्णुधर्मोत्तरपुराण[9] के अनुसार अर्द्धनारीश्वर प्रतिमा का आधा भाग शिव एवं आधा भाग पार्वती का होता है। शिव के सिर के अर्द्ध भाग में जटाजूट, अर्द्धचन्द्र, कानों में कुण्डल, गले में सर्प, एकाद्ध होते हैं। शिव द्विभुजी एवं चतुर्भुजी भी बनाये जा सकते हैं। शिव का हाथ अभय या वरद मुद्रा में होता है। उनके हाथों में कभी–कभी परसु, सूल या अक्षमाला भी दिखलाई जा सकती है। अर्द्धनारीश्वर के दक्षिण भाग में पुरूष वक्ष तथा बाम भाग में पार्वती वक्ष बनाया जाता है। अर्द्धनारीश्वर का वाम भाग स्त्रीयोचित्त विशेषताओं से युक्त होता है। शीर्ष पर उनके करण्डजटामुकुट, ललाट पर अर्द्ध तिलक, ऑखों में काजल, कानों में बालि होती है। वाम भाग में दो हाथ होते हैं। एक हाथ नदी के सहारे तथा एक हाथ नीलात्पल धारण किये होता है। केयूर, कंकण तथा अन्य आभूषणों से अर्द्धनारीश्वर प्रतिमा का वाम भाग सुसज्जित होता है। वाम वक्ष विकसित तथा कुच युक्त होना चाहिए।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय में गुप्तकाल की छठी शताब्दी ईसवी की एक अर्द्धनारीश्वर प्रतिमा प्रदर्शित है । यह प्रतिमा लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है और इसका परिमाप 150x56 सेमी. है । प्रतिमा का पंजीयन संख्या 378 है। इस प्रतिमा में चौकी पर ललितासन मुद्रा में आसीन द्विभुजी देवता की दोनों भुजाएं एवं दायां पैर खंडित है। ठोस प्रभामंडल, त्रिवली कंठाहार, कर्ण आभूषण, सर्प, भुजबंध, उपवीत, कटिबंध से सुशोभित देवता का उर्ध्वरेतस हैं। उनके मस्तिष्क पर दांया अर्धांश जटामुकुट एवं बांया अर्धांश करण्ड मुकुट धारण किये है । दायें अर्धांश से जटायें व बायें अर्धांश में अलंकृत केशराशि है। बायें वक्ष स्थल में उरोज है जो खंडित है। देवता का मुखमंडल सौम्य है।

चित्र क्रमांक. 2 : अर्द्धनारीश्वर, 5वीं शती ईसवी

5. कल्याण सुन्दर प्रतिमाः–

शिव की कल्याण सुन्दर प्रतिमायें शिव पार्वती के विवाह का चित्रण करती है। विष्णु पुराण में वर्णित है कि पार्वती ने तपस्या करने के बाद शिव को प्राप्त किया। शिव ने आनंदमग्न होकर उनके साथ पाणिग्रहण किया। इससे सभी देवता प्रसन्न हुए।[10] इन प्रतिमाओं में शिव बीच में खड़े दिखलाये जाते हैं। उनके दाहिने हाथ में त्रिशूल रहता है। शिव के सिर पर जटामुकुट रहता है। समीप में देवी पार्वती वधु के रूप में प्रदर्शित की जाती है। उनके बायें हाथ में शीसा रहता है। शिव के समीप नंदी और देवी के पास सिंह भी उपस्थित रहता है। चतुर्भुजी ब्रह्मा, हवन करते हुए विष्णु एवं लक्ष्मी कन्या दान करते हुए अंकित होना चाहिए।[11]

इस प्रकार की एक कलात्मक प्रतिमा डॉ. हरीसिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय में प्रदर्शित है। यह प्रतिमा सिरस्ट पत्थर से निर्मित है और इसकी माप 47x34 सेमी. है। प्रतिमा की पंजीयन संख्या 357 है। इस प्रतिमा में जटामुकुटधारी शिव त्रिनेत्र, केशपट्टिका हार, उपवीत, उत्तरीय कंकण, कटिमेखला, अंलकृत धोती और पायल से मंडित हैं। दक्षिण पार्श्व में त्रिभंग मुद्रा में खड़ी देवी की अलंकृत केशराशि दर्शनीय है। देवी के दाहिने हाथ को शिव अपने दाहिने हाथ से ग्रहण किये हुए हैं। देवी के बायें हाथ में दर्पण है, माथे पर बिंदी, चक्रताण्टक हार, भुजबंध, चूडियॉं, कटिमेखला, अंलकृत साडी और पायल से देवी सुसज्जित हैं। उनका दाहिना पैर आगे को निकला हुआ है। शिव अपने हाथ से देवी का दांया हाथ ग्रहण किये हुए हैं। ऊपरी हाथ में कपाल एवं बायें ऊपरी हाथ में त्रिशूल है। उनका चौथा हाथ कट्यावलंबित है। पैरों के समीप मध्य में बैठे पुरोहित का कार्य सम्पन्न करते हुए ब्रह्मा, दाहिने पार्श्व में कमलपुष्प और अस्पष्ट आयुध लिये खड़ी पुरू ष आकृति एवं बांये पार्श्व में दंड लिये एक पुरूष आकृति है। दम्पत्ति के चरणों के नीचे नृत्य और वादन में संलग्न पॉच अनुचरों के दाहिने पार्श्व में वाहन सिंह और बांये पार्श्व में नंदी है। शीर्ष पर परिकर में आकाशीय देवताओं को प्रदर्शित किया गया है। 11वीं सदी की यह कलात्मक प्रतिमा पाल कला का प्रतिनिधित्व करती है।

6. लकुलीशः–

पुराणों में लकुलीश को शिव का 28वॉ अवतार बतलाया गया है[12]। भारत में लकुलीश की सबसे प्राचीन प्रतिमा कायावरोहण से प्राप्त हुई है, जो कुषाण युग की है। शिल्पशास्त्रों में लकुलीश की प्रतिमा का वर्णन करते हुए बतलाया गया है कि उनकी प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में निर्मित होनी चाहिए। उर्ध्वरेतस के साथ उनको अपने हाथों में दण्ड व बीजपूरक लिये प्रदर्शित किया जाना चाहिए। उनके घुटनों पर योगपट्ट होना चाहिए, जिससे प्रतीत हो कि देवता ध्यानमन हैं[13]।

डॉ. हरीसिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय में लकुलीश की एक महत्वपूर्ण प्रतिमा संग्रहीत है। यह प्रतिमा तुमैन (अशोक नगर) से प्राप्त हुई है । बलुआ पत्थर से निर्मित इस प्रतिमा का माप 50 x39 सेमी है। प्रतिमा की पंजीयन संख्या 318 है। इस प्रतिमा में लकुलीश देव कमलासन योग मुद्रा में बैठे हुए हैं। उनकी चारों भुजायें व मस्तिष्क खंडित है। कंधे पर फैली अलकावली, कण्ठाहार से सुशोभित देवता के घुटनों से होता हुआ योग पट्ट, उर्ध्वरेतस एवं दोनों पार्श्व में अस्पष्ट आकृतियॉं बनी हुई हैं। ये आठवीं सदी ईसवी की प्रतिहारकालीन प्रतिमा है।

7. भैरव :–

शिव के सर्जक तथा संहारक दोनों के समन्वित रूप का प्रतिनिधित्व भैरव के द्वारा किया जाता है । पुराणों में इनको भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा गया है। इनके 64 नाम मिलते हैं। विष्णुधर्मोत्तरपुराण[14] में भैरव के रूप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि इनका उदर लंबा, पिंडल वर्ण के गोलाकार नेत्र तथा दाढी बड़ी बड़ी होती है। अत्यंत भीषण मुख, बड़े–बड़े नासापुट होते हैं। भैरव का शरीर सर्पो के आभूषणों से अंलकृत रहता है और वे गले में मुण्डों की माला धारण किये रहते हैं। इनके नुकीले लम्बे दॉत, स्वच्छ नख होते हैं।

डॉ. हरीसिंह गौर पुरात्व संग्रहालय में भैरव की तीन कलात्मक प्रतिमायें प्रदर्शित है। प्रथम प्रतिमा में भैरव स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित है। उनके सिर पर मुकुट है और कर्ण कुण्डलधारी हैं। उनके सिर के पीछे गोल प्रभामंडल है। वे विशाल वनमाला धारण किये जुए हैं उनके गले में ग्रैवेयक व कमर पर कटिमेखला है। उनके हाथों में कंकण एवं सर्प बाजुबंध दिखलाई दे रहे हैं। भैरव का दांहिनी ओर का पैर टूटा हुआ है। प्रतिमा के शिखर पर दोनों ओर मालाधारी गंधर्व प्रदर्शित हैं। भैरव के पैरों के पास श्वान भी दिखलाई दे रहा है। भैरव के दोनों पार्श्व में नीचे की ओर दो दो अस्पष्ट आकृतियॉं दिखलाई दे रही हैं। यह प्रतिमा लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है जिसका परिमाप 86 x 44 सेमी है। इस प्रतिमा की पंजीयन संख्या 445 है। यह दसवीं सदी ईसवी की प्रतिमा है और एरण (सागर) से प्राप्त है।

इस संग्रहालय की द्वितीय प्रतिमा में भी भैरव स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित हैं। वे जटामुकुटधारी हैं और उनके कर्ण कुण्डलधारी हैं। वे गले में नरमुण्डमाला, हार एवं यज्ञोपवीत धारण किये हुए हैं। उनको विशाल वनमाला धाराण

किये हुए दिखलाया गया है। उनकी छः भुजायें थी जिसमें से दांयी एक भुजा में वे कटार लिये हुए हैं। उनकी शेष सभी भुजायें खंडित हो गयी हैं। प्रतिमा की चौकी पर श्वान भी प्रदर्शित है। यह प्रतिमा पत्थर से निर्मित है। प्रतिमा का परिमाप 96 x 56 सेमी है और इसकी पंजीयन संख्या 376 है। प्रतिमा सदी ईसवी की है।

संग्रहालय में भैरव की तृतीय प्रतिमा में भी वे स्थानक मुद्रा में हैं। उनके सिर पर जटामुकुट है। कटि वस्त्र पहना है। उनके कानों में कुण्डल वे दाहिने हाथ में कलश लिये हुए हैं एवं उनका बांया हाथ ... में है। वे विशाल वनमाला भी धारण किये हुए हैं। उनके गले में ग्रैवेयक व माला है उनके हाथों व भुजाओं में सर्पवलय प्रदर्शित है। उनकी कमर पर कटिमेखला दिखलाई दे रही है। प्रतिमा के नीचे ... प्रदर्शित है जो खंडित हो चला है। यह प्रतिमा लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है जिसका परिमाप ... है और इसकी पंजीयन संख्या आर–428 है। भैरव की यह कलात्मक प्रतिमा है।

6 शिवलिंग उपासना शिलापट्ट :

इस पुरातत्व संग्रहालय में स्वतंत्र रूप से प्रदर्शित शिवलिंग नहीं है। किन्तु दो प्रदर्शित शिलापट्ट ... दृश्य में शिवलिंग को भी दिखलाया गया है। प्रथम शिलापट्टा देवरी (सागर) से प्राप्त है और 11वीं ... का है। लालबलुआ पाषाण से निर्मित इस शिलापट्टा का परिमाप 45x24 सेमी है। शिलापट्ट की ... संख्या 536 है। इस शिलापट्ट में शिवलिंग एक पीठिका पर स्थापित है और दाहिनी ओर बैठे ... पूजा कर रहे हैं। बांयी ओर एक स्त्री शिशु को गोद में लेकर ललितासन मुद्रा में बैठी दिखलाई ... शिलापट्ट की मध्यवर्ती मेधा में युद्ध का दृश्य प्रदर्शित है। नीचे वाली मेधा में दो घुड़सवार योद्धा ... शिवलिंग को रखा हुआ प्रदर्शित किया गया है।

इस संग्रहालय में एक अन्य शिलापट्ट भी है जिस पर शिवलिंग पूजा का दृश्य प्रदर्शित किया गया ... शिलापट्ट भी 11वीं सदी ईसवी का और लाल बलुआ पाषाण से निर्मित है। शिलापट्ट का परिमाप ... है और इसकी पंजीयन संख्या 403 है। शिलापट्ट में एक पीठिका पर रखे शिवलिंग का जलाभिषेक ... पुरूष आकृतियां दिखलाई गई हैं। बांयी ओर खड़े पुरूष की पगड़ी व दाढ़ी उल्लेखनीय है।

डॉ. हरीसिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय में प्रदर्शित ये प्रतिमायें बुन्देलखण्ड के अलग अलग स्थानों से ... संग्रहालय में प्रदर्शित ये प्रतिमायें 'शैव प्रतिमाओं के शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से विशेष महत्व रखती ... शिव प्रतिमाओं में सौन्दर्य, सजीवता तथा कलात्मकता का सुन्दर समन्वय है। इन प्रतिमाओं के ... से बुन्देलखण्ड के इस भू–भाग में शैव धर्म के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश पड़ता है।

संदर्भ:–

1 शिवमहापुराण, रूद्र संहिता, 5,44–49 ।

2 श्रीवास्तव बृजभूषण, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, पृ. 78 ।

3 श्रीमदभगवत् 8/12/2 ।

4 रूपमण्डन 35/16/20 ।

5 युग्मं स्त्री पुरूषं कार्य मुमेशौ दिव्य रूपिणौ ।
अष्ट वक्त्रं तु देवेशं जटा चन्द्रार्ध भूषितम ।।
वामपाणि तु देवस्य देवस्कन्धेनि योज येत् ।
दक्षिण तु करं शम्भोरुतपलेन विभूषितम् ।। (वि.ध.पु. 105, 8–10)

6 अथर्वेद– 108.27 ।

7 ऋग्वेद 1.164.16.17 ।

8 श्रीमदभागवत–4. 4.3 ।

9 विष्णुधर्मोत्तरपुराण– 105, 8–10 ।

10 विष्णु पुराण– 3. 28–27 ।

11 अंशुमद भेदागम, अध्याय– 68 ।

12 लिंग पुराण 23.21, वायु पुराण, 24.29 ।

13 त्रिवेदी सुधीर कुमार, मध्य भारत में प्रतिहार कालीन कला एवं स्थापत्य, पृ. 89 ।

14 लम्बोदर तथा कुर्यादवृत्तपिङललोचनम् ।।
दृष्ट्राकरालवदन फुल्लनासापुटम् तथा ।
कपाल मालिन रौद्र सर्वतः सर्पभूषणम् ।।